वर्ष – 2 अंक – 6

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

संपादक – पं. विराग शास्त्री, जबलपुर

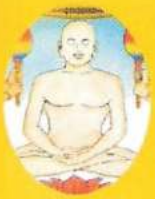
अरिहंत

सिद्ध

आचार्य

उपाध्याय

हमारे आराध्य नवदेव

इस स्तंभ के अंतर्गत
नव देवताओं के परिचय क्रम में
पंच परमेष्ठी का स्वरुप पढ़ चुके हैं।
इस अंक में पढ़िये

जिनवाणी

साधु

जिनबिम्ब

जिनधर्म

जिनालय

जिनवाणी का अर्थ है वीतरागी भगवान जिनेन्द्र परमात्मा की वाणी। समवशरण में दिव्यध्वनि के माध्यम से गणधर ने यह वाणी सुनी और आचार्यों, मुनिराजों और विद्वानों ने इसका विस्तार किया। जो कि हमें अनेक ग्रंथों में प्राप्त है। ध्यान रहे कि जिनवाणी वीतरागी एवं हित के उपदेश देने वाली होती है। जिनेन्द्र भगवान की वाणी होने से यह भी जिनेन्द्र के समान पूज्य मानी गई है।

होली

रंग बिरंगी होली आई, खुश होते सब बहनें भाई

आओ अनोखी होली खेलें, जो खेली मुनिराजों ने

करुणा क्षमा का रंग बनायें, ज्ञान गुलाल सदा उडायें।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की पिचकारी हम लेकर आयें।

मम्मी ने समझाया हमको, नहीं किसी पर रंग डालना।

नहीं दीवारें गंदी करना, नहीं कहीं पर रंग उड़ाना।

इनसे नहीं कुछ लाभ है भाई

पानी जितना खर्च करोगे, उतना पाप कमाओगे

धर्म भाव की होली खेलो, तो आनंद मनाओगे।

इसमें ही हम सबकी भलाई।

प्रेरक प्रसंग–

सुख का राज

एक नगर में 30 लोगों का परिवार एक साथ खुशी से रहता था। सबकी अपनी–अपनी दुकानें थीं किन्तु सबका भोजन एक साथ बनता था। उस परिवार के मुखिया से पूछा कि आपके पुत्र और सब घर के लोग आपके बडे आज्ञाकारी हैं। उन सज्जन ने उत्तर दिया– कोई किसी का आज्ञाकारी नही है। मेरे मन में किसी के प्रति बुरे परिणाम नहीं आते और मैं किसी के काम में हस्तक्षेप नहीं करता सबको देखता रहता हूँ और यही शिक्षा उनको देता रहता हूँ कि गलत विचार मत रखो और जो हो रहा है, उसे मात्र जानो क्योंकि वही होने वाला था जो हो रहा है, इसी नीति के कारण घर में सुख शांति है।

समय का सदुपयोग

जज महादेव गोविन्द रानाडे को भाषायें सीखने का बहुत था, जिसके कारण उन्होंने अनेक भाषाओं का अध्ययन कर लिया, किन्तु बंगला भाषा नहीं सीख पाये थे। उनके मन में बंगला भाषा को सीखकर बंगला साहित्य पढने का बहुत इच्छा थी। उनके पास समय की बहुत अधिक कमी थी।

उन्होने बंगला भाषा सीखने के लिये एक बंगला भाषी नाई को प्रतिदिन शेविंग के नियुक्त कर लिया। जितने समय वह नाई शेविंग बनाता उतने समय तक महादेव जी बंगला सीखते रहते।

रानाडे की पत्नी को यह बात पसन्द नहीं आई। उसने अपने पति को कहा कि आप हाईकोर्ट के जज हैं। यदि किसी को यह पता चलेगा कि आप नाई से भाषा सीखते हैं तो आपकी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी । इसलिये आप किसी विद्वान से भाषा सीखिये।

रानाडे ने कहा–तुम सही कह रही हो। पर मेरे पास इतना समय नही है कि मैं विद्वान से भाषा सीखूँ। शेविंग के लिये मुझे प्रतिदिन समय निकालना पडता है। यदि मैं इस समय का सदुपयोग कर भाषा सीखता हूँ तो तुम्हें क्या समस्या है ?

अहिंसा गीत

जिनधर्म की डगर पर, बच्चो दिखाओ चल के।
यह धर्म है अहिंसा, धारो हृदय से बढ़ के ॥
जीती कषाएं जिनने, जीती हैं इन्द्रियां भी।
जीती क्षुधा तृषा भी, संयम के पथ पर चल के ॥1॥ जिन धर्म

जीता स्वयं को जिसने, 'जिन' शब्द कह रहा है।
माने जो ऐसे जिनको, सच जैन वह रहा है ॥
सच्चे बनोगे जैनी, जिनवर के पथ पे चल के ॥2॥ जिनधर्म

जीना सभी को प्रिय है, चाहे न कोई मरना।
तरुवर के धर्म जैसा, उपकार सबका करना ॥
सब में छिपी अहिंसा, जीयो जिलाओ मिल के ॥3॥ जिनधर्म

यदि हो अहिंसा प्रेमी, स्वागत करो दिवस का।
दिन में ही लो बरातें, दिन में हो भोज सबका ॥
बन जाओ श्रेष्ठ मानव, कुरीतियां कुचल के ॥4॥ जिन धर्म

वृषभादि वीर प्रभु ने, जिन धर्म को जिया है।
जीकर के कोई सिद्ध, अरहंत बन गया है ॥
जीतो स्वयं के होगे, महावीर तुम भी कल के ॥5॥ जिन धर्म

आर्यिका मृदुमति माताजी

चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता के अंतर्गत हमने यह चित्र प्रकाशित किया था जिसके उत्तर में अनेक कहानियों में से निम्न कहानी का चयन किया गया –

दो भाई

एक गांव में संजय और विजय दो भाई रहते थे। दोनों भाईयों की जैन धर्म में विशेष श्रद्धा थी और दोनों जैन धर्मानुसार आचरण करते हुये जीवन यापन करते थे।

बड़ा भाई संजय विलक्षण प्रतिभा का धनी था साथ ही अनेक विद्याओं का स्वामी था। वह अपनी इच्छानुसार अनेक रूप धारण कर सकता था किंतु इन विद्याओं का प्रयोग कभी लौकिक जीवन में नहीं करता था।

एक बार छोटे भाई के अनेक बार आग्रह करने पर वह अपना विशेष रूप को दिखाने को तैयार हो गया। निर्धारित समय और स्थान पर दोनों भाई पहुँचे तब बड़े भाई संजय ने एक विशेष मंत्र पढ़ा और देखते ही वह एक विशाल वृक्ष बन गया उसके मोटे तने पर हजारों शाखायें थीं, जिन पर हजारों पत्तियां और फूल लगे थे। कुछ ही समय में उस पर अनेक पक्षी चहचहाने लगे तब छोटा भाई अपने मित्रों को बुला लाया और अपने भाई की प्रतिभा का बखान करने लगा सभी मित्र उससे बहुत प्रभावित हुए।

तभी विजय को प्यास लगी और वह नदी पर पानी पीने चला गया तभी उसके मित्र उस वृक्ष पर चढ़ गये और शरारतें करने लगे, सारी पत्तियां तोड़ने लगे, शाखायें तोड़कर फेंकने लगे। कुछ ही देर में उन सबने मिलकर पूरा वृक्ष तहस नहस कर डाला। कुछ देर बाद जब छोटा भाई पानी पीकर आया तब उसने पेड़ की हालत देखी तो उसकी आँखें छलछला उठीं। जल्दी से उसने अपने भाई से विनती की कि अब आप फिर से अपने पुराने रूप में आ जाईये। तब वह भाई अपने उसी रूप में आ गया लेकिन यह क्या उसके हाथ पैर आधे कटे हुये थे, नाक छिल गई थी, कान आधे कट गये थे, सिर के बाल आधे झड़ गये थे।

अपने भाई की हालत देखकर विजय जोर – जोर से रोने लगा तब संजय ने उससे कहा कि हम पेड़ों को निर्जीव समझते हैं जबकि उनमें भी जान होती है, उनके भी अंग उपांग होते हैं कि हम उनसे अजीव जैसा व्यवहार करते हैं। मैं कुछ देर के लिये वृक्ष बना तब मेरी ये हालत हो गई और कई सालों तक पेड़ बने रहें तब कितना दुख होगा। इसलिये अब हम प्रतिज्ञा करते हैं कि पेड़ों के साथ जीव के समान व्यवहार करेंगे और व्यर्थ में उन्हें नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।

प्रांजल अनूप कुमार नजा
ललितपुर

अहिंसा व्रत

सुरम्य देश के पोदनपुर नगर में राजा महाबल रहता था। नंदीश्वर पर्व में अष्टमी के दिन राजा ने यह घोषणा कराई कि आठ दिन तक किसी भी तरह का जीवघात नहीं किया जावेगा। राजा का बल नाम का एक पुत्र था, जो मांस खाने में आसक्त था। उसने छिपकर राजा के बगीचे में बकरे को मरवाकर तथा पकवा कर खा लिया। राजा ने जब मेंढ़ा मारे जाने का समाचार सुना तब वह बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने बकरे को मारने वाले की खोज शुरु कर दी। उस बगीचे का माली पेड़ के ऊपर चढ़ा था। उसने बकरे को मारते हुए राजकुमार को देख लिया था। माली ने रात में यह बात अपनी स्त्री से कही। उसके बाद छिपे हुए गुप्तचर पुरुष ने राजा से यह समाचार कह दिया। प्रातः काल माली को बुलाया गया। उसने भी वह घटना सुनाई। मेरी आज्ञा को मेरा पुत्र ही तोड़ता है। इससे रुष्ट होकर राजा ने कोटपाल से कहा कि बलकुमार को प्राणदण्ड दिया जाये।

उसके बाद उस कुमार को मारने के स्थान पर ले गये। चाण्डाल को लाने के लिये जो आदमी गये थे उन्हें देखकर चाण्डाल ने अपनी स्त्री से कहा कि हे प्रिये! तुम इन लोगों से यह कह दो कि चाण्डाल बाहर गया है। ऐसा कहकर वह घर के कोने में छिपकर बैठ गया। जब सिपाहियों ने चाण्डाल को बुलाया तब चाण्डाली ने कह दिया कि वह आज गाँव गये हैं। सिपाहियों ने कहा कि वह पापी अभागा आज गाँव चला गया। राजकुमार को मारने से उसे बहुत भारी सुवर्ण और रत्नों

सुरम्य देश के पोदनपुर नगर में राजा महाबल रहता था। नंदीश्वर पर्व में अष्टमी के दिन राजा ने यह घोषणा कराई कि आठ दिन तक किसी भी तरह का जीवघात नहीं किया जावेगा। राजा का बल नाम का एक पुत्र था, जो मांस खाने में आसक्त था। उसने छिपकर राजा के बगीचे में बकरे को मरवाकर तथा पकवा कर खा लिया। राजा ने जब मेंढ़ा मारे जाने का समाचार सुना तब वह बहुत क्रुध्द हुआ। उसने बकरे को मारने वाले की खोज शुरु कर दी। उस बगीचे का माली पेड़ के ऊपर चढ़ा था। उसने बकरे को मारते हुए राजकुमार को देख लिया था। माली ने रात में यह बात अपनी स्त्री से कही। उसके बाद छिपे हुए गुप्तचर पुरुष ने राजा से यह समाचार कह दिया। प्रातः काल माली को बुलाया गया। उसने भी वह घटना सुनाई। मेरी आज्ञा को मेरा पुत्र ही तोड़ता है। इससे रुष्ट होकर राजा ने कोटपाल से कहा कि बलकुमार को प्राणदण्ड दिया जाये।

उसके बाद उस कुमार को मारने के स्थान पर ले गये। चाण्डाल को लाने के लिये जो आदमी गये थे उन्हें देखकर चाण्डाल ने अपनी स्त्री से कहा कि हे प्रिये! तुम इन लोगों से यह कह दो कि चाण्डाल बाहर गया है। ऐसा कहकर वह घर के कोने में छिपकर बैठ गया। जब सिपाहियों ने चाण्डाल को बुलाया तब चाण्डाली ने कह दिया कि वह आज गाँव गये हैं। सिपाहियों ने कहा कि वह पापी अभागा आज गाँव चला गया। राजकुमार को मारने से उसे बहुत भारी सुवर्ण और रत्नों का लाभ होता। उनके वचन सुनकर चाण्डाली को धन का लोभ आ गया। अतः वह मुख से तो बार-बार यही कहती रही कि वह गाँव गया है परन्तु हाथ के संकेत से दिखा दिया कि वह अंदर है। तब सिपाहियों ने उसे घर से निकाल कर राजकुमार को मारने के लिए ले गये। चाण्डाल ने कहा कि

मनीष शास्त्री, नागपुर

Join the Number and make the picture

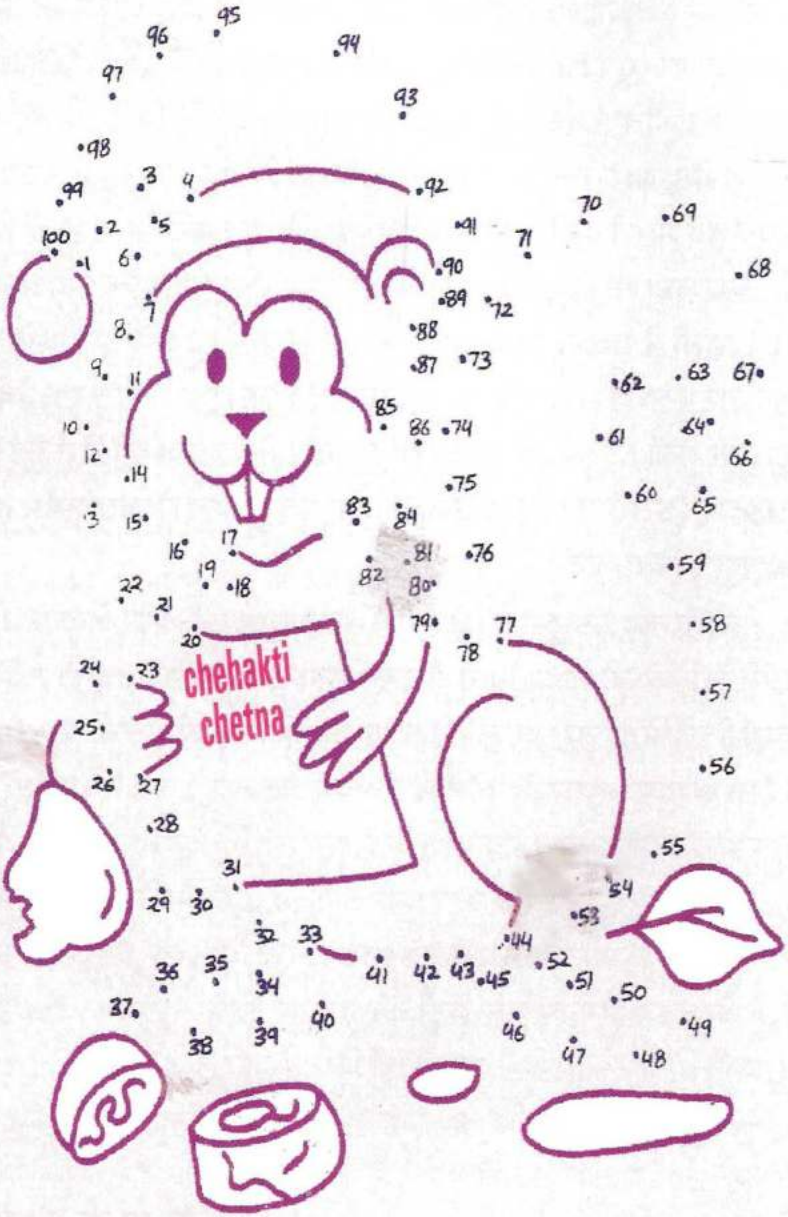

प्रेरक प्रसंग यदि कोई न उठाये तो–

मति खिलौने के लिए मचल रही थी, इसलिए तो वह बाजार आयी थी। दीदी ने समझाते हुए उसे बाद में खिलौना ले देने को कहा पर मति तो जिद की पक्की थी। अचानक उसकी नजर पाँच के नोट पर पड़ी जो पास में ही पड़ा था, उसने उसे जल्दी से उठा लिया और दीदी से बोली–दीदी! अब तो खरीद दो ये हैं पैसे।

देखो! दूसरों के पैसे उठाने में चोरी का पाप लगता है अतः तुम पैसे वहीं डाल दो, जिसके होंगे उसे मिल जायेंगे– समझाते हुए दीदी ने कहा।

मगर दीदी इन्हें दूसरा भी तो उठा लेगा– मति ने कहा। दूसरे व्यक्ति ने भी यदि यही सोचा तो वह भी नहीं उठायेगा – दीदी ने कहा।

तो तीसरा व्यक्ति उठा लेगा– मति ने फिर कहा।

उसने भी न उठाये तो उसे ही मिल जायेंगे जिसके ये पैसे गिर गये हैं।

पर दीदी कोई न कोई तो उठा ही लेगा– मति ने अपनी छोटी बुद्धि पर पूरा जोर देकर कहा।

यदि कोई भी न उठाये तब तो उसे ही मिलेंगे न जिसके ये हैं।

मति की समझ में बात आ गई वह पैसे डालते हुए बोली– हाँ दीदी, सच! क्या कभी ऐसा भी होगा।

माता पिता विशेष ध्यान दें –

चहकती चेतना में प्रकाशित सभी लेख बाल अथवा किशोर स्तर के होते है। इसमें प्रकाशित कई जानकारियाँ कई लोग अनभिज्ञ रहते हैं। बच्चों को कुछ बातें समझ नहीं आती। अतः आपका कर्त्तव्य है कि आप बच्चों के साथ बैठकर उन्हें समझावें और उन्हें प्रेरणा प्रदान करें। इससे आप भी ज्ञानवर्धक जानकारियों से परिचित होंगे और बच्चों को आपके साथ आनंद आयेगा।

भूल सुधार

1. पिछले अंक में इन्हें भी जानिये स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित समवशरण पृथ्वी से 500 धनुष ऊँचाई पर और वहां पहुँचने के लिये 20,000 सीढ़ियाँ होती हैं।
2. पिछले अंक में प्रकाशित चित्रकला प्रियम मुकेश जैन अलीगंज एवं ईशान डॉ. योगेश जैन ने भेजी थी।

भगवान महावीर
- एक परिचय

पिता का नाम	- राजा सिद्धार्थ नाथ वंश
माता का नाम	- महारानी त्रिशला (प्रियकारिणी)
पाँच नाम	- वर्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति, महावीर
चिन्ह	- सिंह
शरीर का रंग	- लाल पीत वर्ण
ऊँचाई	- सात हाथ
कुमार काल	- 30 वर्ष
मुनिराज काल	- 42 वर्ष
कुल आयु	- 72 वर्ष
केवली कब बने	- दीक्षा के 12 वर्ष बाद
आर्यिकाओं का संख्या	- 36000
प्रमुख गणधर का नाम	- इन्द्रभूति (गौतम)
गणधरों की संख्या	- 11
प्रमुख आर्यिका का नाम	- चन्दना
अवधिज्ञानी मुनिराजों की संख्या	- 700

विक्रिया ऋद्धिधारी मुनियों की संख्या	– 900
कुल संघ की संख्या	– 14000
श्रावकों की संख्या	– 1 लाख
श्राविकाओं की संख्या	– 3 लाख
मोक्षगामी शिष्यों की संख्या	– 7200
गर्भ कल्याणक व स्थान	– आषाढ शुक्ल 6 कुण्डलपुर
जन्म कल्याणक	– चैत्र शुक्ल 13
तप कल्याणक	– मगसिर शुक्ल 10 कुण्डलपुर
ज्ञान कल्याणक स्थान	– वैशाख शुक्ल 10 पावापुरी
मोक्ष कल्याणक	– कार्तिक कृष्ण अमावस्या पावापुरी
जन्मस्थान	– कुण्डलपुर बिहार
जन्म नक्षत्र	– उत्तरा फागुनी
जन्मकाल	– चौथे काल के 75 वर्ष 8.5 माह शेष रहने पर
तप कल्याणक की पालकी और वन	– चंद्राभा और नाथ वन
दीक्षा के बाद प्रथम आहार और स्थान	– तीसरे दिन और स्थान कुण्डलपुर
प्रथम आहार की वस्तु	– गाय का दूध
आहारदाता का नाम	– वकुल
आहारदाता का रंग	– काला
चैत्य वृक्ष का नाम और ऊँचाई	– साल और 32 धनुष
केवलज्ञान होने का स्थान	– ऋजुकूला नदी के तट पर जम्भीक गांव
समवशरण का विस्तार	– 1 योजन
केवलज्ञान का नक्षत्र	– मघा
निर्वाण का नक्षत्र एवं काल	– स्वाति/प्रातः
निर्वाण का आसन	– कायोत्सर्ग (खड़े हुये)
निर्वाण स्थान	– पावापुर

श्रीमती श्वेता जैन, इंदौर

इन्द्रिय

- इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

  जिससे जीव की पहचान होती हैं।

- इन्द्रियाँ कितनी होती हैं ?

  इन्द्रियाँ पाँच होती है।

- पहली इन्द्रिय कौन-सी है ?

  स्पर्श पहली इन्द्रिय है।

- पहली इन्द्रिय क्या करती है ?

  ठंडा-गरम आदि का ज्ञान कराती है।

- दूसरी इन्द्रिय कौन-सी है ?

  जिह्वा दूसरी इन्द्रिय है।

- दूसरी इन्द्रिया क्या कराती है ?

  खट्टा -मिठा आदि का ज्ञान कराती है।

- तीसरी इन्द्रिय कौन-सी है।

  नासिक तीसरी इन्द्रिय है।

- तीसरी इन्द्रिय कया कराती है ?

  सुगंध-दुर्गन्ध का ज्ञान कराती है।

- चौथी इन्द्रिय कौन-सी है ?

  चक्षु चौथी इन्द्रिय है।

- चौथी इन्द्रिय क्या कराती है ?

  सफेद-लाल आदि रंग दिखाने का कार्य करती है।

- पाँचवी इन्द्रिय कौन-सी है ?

  कर्ण पाँचवी इन्द्रिय है।

- पाँचवी इन्द्रिय क्या करती है ?

  शब्द सुनाने का कार्य करती है।

कथा गुच्छ

वे तो अभी जन्मे ही नहीं

एक समय की बात है, सेठ धनराज के यहाँ नग्न दिगम्बर मुनिराज अभयनंदी का निर्विघ्न आहार हुआ। आहार के बाद सेठजी ने मुनिराज से उपदेश देने की प्रार्थना की।

मुनिराज के उपदेश देने के पश्चात् सेठ की पुत्रवधू ने हाथ जोड़कर महाराजश्री से सविनय निवेदन करते हुए प्रश्न पूछा कि ''महाराज ! इतने सबेरे-सबेरे कैसे ?''

मुनिराज ने विद्वतापूर्ण अभिप्राय को समझकर उत्तर दिया ''समय की खबर नहीं थी।'' इसके बाद उन्होंने पूछा- ''बेटी ! तेरी आयु कितनी है?''

पुत्रवधू ने उत्तर दिया ''तीन वर्ष।''

तेरे पति की आयु कितनी है ?

''कुल एक वर्ष।''

मुनिराज ने फिर पूछा- ''तुम्हारी सास की आयु कितनी है ?''

उत्तर मिला - ''छः मास की।''

और ससुरजी की आयु क्या है ?

उत्तर मिला - ''वे तो अभी जन्मे ही नहीं।''

मुनिराज ने फिर पूछा - ''बेटी। ये सब ताजा खाते हैं या बासा ?''

जबाब मिला – ''अभी तक तो बासा ही खा रहे हैं''

इतनी चर्चा के बाद मुनिराज अभयनंदी जंगल में चले गये।

इधर मुनिराज के जाते ही सेठ धनराज अपनी पुत्रवधू द्वारा परिवार जनों के संबंध में अनाप–शनाप उत्तर सुन क्रोधित हो पुत्रवधू को घर से बाहर निकालने की बात कहने लगे। स्थिति को समझते हुए पुत्रवधू ने कहा – ''पिताजी ! मैने सारी बातें सत्य व सम्मानजनक ही कही हैं, आपको विश्वास न हो तो मुनिराज से पूछकर भी निर्णय कर सकते हैं।''

सेठ ने मुनिराज के पास जाकर इन गूढ उत्तरों का मतलब पूछा, तब मुनिराज ने कहा – ''सेठजी! आपकी पुत्रवधू तो बडी ही विदुषी है, उसने पूछा था – महाराज सबेरे–सबेरे कैसे? अर्थात् आपने इतनी छोटी सी उम्र में मुनिव्रत क्यों ले लिया ?

जिसका मैंने उत्तर दिया था कि – ''समय की खबर नहीं थी, किस आयु में काल उठा ले जाए, इसका क्या पता।''

आपके परिवारजनों की आयु पूछने का मतलब है किसको कब से धर्म की रुचि हुई है? उत्तर में तुम्हारी पुत्रवधू ने खुद की तीन वर्ष, पति की एक वर्ष, सास की छः माह – उम्र बताई थी, जिसका अभिप्राय है कि इन सब को धर्म की रुचि हुए इतना समय ही हुआ है।

ससुरजी के संबंध में उसने जो कहा कि उनका तो अभी जन्म ही नहीं हुआ इसका अर्थ है कि मनुष्य का सच्चा जन्म तो धर्म – श्रद्धान से ही होता है, शेष तो पशु जन्म है।

बासा खाने का मतलब है कि ''सब पूर्व जन्म के पुण्य की कमाई ही खा रहे हैं''

यह सब सुन सेठजी को अपनी पुत्रवधु की बुद्धिमानी पर गर्व व हर्ष महसूस हुआ। उन्होने अपनी रुचि को धार्मिक कार्यो में लगाना शुरु कर दिया।

ज्ञानियों की क्रिया निराली ही होती है।

दुनिया चाहे उन्हें मूर्ख व पागल भले ही समझे परन्तु जिन्हें अपने ज्ञानधन की निधि प्राप्त हुई है उन्हें पर पदार्थ की परवाह नही होती।

– मयंक जैन
बरगी

अपने वर्धमान

– आज तो सारे नगर में खुशियाँ छाई हुई हैं। जगह–जगह ढोल बज रहे हैं। घर–घर में रंगोली सजाई जा रही है। लग रहा है जैसे कोई नया त्यौहार आया हो।

– अरे भाई! त्यौहार ही तो है। अपने महाराज सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला माता ने बालक वर्धमान को जन्म दिया है।

– संसार में हजारों लोग जन्म लेते हैं और हजारों लोग रोज मृत्यु को प्राप्त होते हैं। जन्म दिया है तो इसमें क्या खास बात है ?

– अरे तुम तो पूरे नासमझ हो।

– तो तुम्ही समझाओ ना।

– अरे बन्धु! अपने वर्धमान कोई सामान्य बालक नहीं हैं।

– तो क्या भगवान कोई अवतार लेकर पैदा हुये हैं.....

– अरे तुम समझते तो हो नहीं। व्यर्थ में समय खराब कर रहे हो।

– अच्छा तुम्हीं समझाओ।

– अपने बालक वर्धमान वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकर में से अंतिम तीर्थंकर होने वाले हैं। यह उनका अंतिम जन्म है।

– इसका तात्पर्य वे मरण को प्राप्त नहीं होंगे। वे अमर हो जायेंगे।

– हाँ भाई ! जन्म–मरण के दु:खों को नाशकर अतिशीघ्र निर्वाण पद को प्राप्त करेंगे।

– पर हम संसारी अपनी संतान का जन्म दिन धूमधाम से क्यों मनाते हैं?

– हम तो रागी हैं। जन्म लेना ही शर्म की बात है और लोग जन्म दिवस मनाकर उसकी अनुमोदना करते हैं। जन्म तो बालक वर्धमान का मनाया जाना चाहिये। जो अपने जीवन की शक्ति का उपयोग संसार का नाश करने के लिये करेंगे।

– हम भी अपनी संतान को समझायेंगे कि हम स्वयं अपना जन्मदिन मनायें इसमें कोई बड़ी बात नहीं। संसार के अभाव की भावना भाओ और अपना जीवन इतना पवित्र बनाओ कि सारा संसार हमारी जन्म जयंती मनाये। बालक वर्धमान की तरह।

– वाह! कितने उच्च विचार हैं तुम्हारे। यदि सभी जीव इस जन्म दिन पर संसार के नाश की प्रतिज्ञा लें तो कितना उत्तम होगा।

– अब चलें। राजमहल में जन्मदिवस बडे धूमधाम से मनाया जा रहा है चलकर उत्सव का आनंद लें।

– हाँ हाँ चलो।

प्रेरक प्रसंग–

विश्वास

आचार्य संमतभद्र बहुत महान तार्किक आचार्य हुये हैं। एक बार मुनि अवस्था में उन्हें भस्मक व्याधि रोग हो गया। इस रोग में बहुत अधिक भूख लगती है। जब रोग बढ़ गया तो उन्होंने अपने आचार्य के पास जाकर समाधि लेने की आज्ञा मांगी। आचार्य श्री ने समाधि देने से मना करते हुये कहा कि तुम्हारे निमित्त से बहुत जीवों का कल्याण होने वाला है, अतः समाधि न लेकर अपनी भूख किसी तरह शांत कर लो। आचार्य श्री की आज्ञा लेकर उन्होंने मुनिपद छोड़कर सन्यासी का भेष धारण कर लिया और वाराणसी के राजा से कहा कि वह शिव को पूरा भोग खिला सकते हैं। तब राजा ने शिव मंदिर में पुजारी बना दिया। शंकरजी के भक्त जो भोग चढाते थे वह पूजा के बहाने कमरे में बंद होकर वे स्वयं खाने लगे। लगातार पकवान खाने से उनकी भूख शांत होने लगी जिससे कुछ भोग बचने लगा। तब राजा को मालूम हुआ कि यह सन्यासी सारा भोग स्वयं खा जाता है और उनसे झूठ बोलता है।

यह सुनकर राजा ने समंतभद्र से कहा–तुम शिव को नमस्कार करो अन्यथा तुम्हें सजा दी जायेगी।

समंतभद्र बोले – मेरा मस्तक वीतरागी सर्वज्ञ जिनेन्द्र परमात्मा के चरणों में ही झुकता है किसी दूसरे के सामने नही।

राजा ने बहुत जिद की तो समंतभद्र ने चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति (स्वयं भू स्तोत्र) करना प्रारंभ कर दिया। जब वे चन्द्रप्रभु भगवान की स्तुति कर रहे थे तो उस पिण्डी में से चन्द्रप्रभ भगवान की ज्योर्तिमय प्रतिमा प्रगट हो गई।

प्रतिमा के प्रगट होते ही आकाश में जयजयकार होने लगी। समंतभद्र ने श्रद्धा से प्रतिमा को नमस्कार किया। इस महान घटना के प्रभावित होकर राजा शिवकोटि एवं अनेक जीवों ने निर्ग्रन्थ दिगम्बर दीक्षा ले ली। आचार्य समंतभद्र ने प्रायश्चित लेकर पुनः मुनि दीक्षा ले ली और जैन धर्म का प्रचार निर्भयता के साथ किया।

वीर प्रभु
की जन्म जयंती

वीर प्रभु की जन्म जयंती मिलकर आज मनायेंगे।
जैन धर्म की महिमा वाले, गीत नये हम गायेंगें ॥
कुण्डलपुर में जन्म लिया था, जग में तब कल्याण हुआ था।
30 वर्ष की उम्र में जग से नाता तोड दिया था।
महावीर मुनि के दर्शन करके अपना भाग्य सराहेंगे।

वीर प्रभु.....

करुणा सागर महावीर ने केवल ज्ञान पाया था।
कैसे जीव सुखी होवें वह सच्चा मार्ग बताया था
महावीर के संदेशों को जीवन में अपनायेंगे।

वीर प्रभु.....

वीर प्रभु निर्वाण पधारे दीपावली मनाई थी
शासन नायक कहलाये वे, मुक्तिपुरी तब पाई थी
महावीर के पथ पर चलकर महावीर बन जायेंगे

वीर प्रभु.....

– विराग शास्त्री, जबलपुर

कथा गुच्छ

सच हो सकता है

एक बार अकबर अपने कक्ष में बैठे बीरबल को अपना स्वप्न सुना रहे थे। अकबर ने कहा - बीरबल ! आज रात के तीसरे प्रहर में मैंने बड़ा भयानक स्वप्न देखा ..... मैंने देखा कि रबर की गेंद की तरह मैं तीर-चार बार ऊपर उछला फिर नीचे गिर गया, देखता हूँ कि मैं जहन्नुम (नरक) में पहुँच गया हूँ।

"वातावरण बड़ा ही वीभत्स हैं, जगह-जगह खून व पीप की नदियाँ बह रही हैं, लोग एक दूसरे को मार व काट रहे हैं। इतने में कुछ लोग तलवार लेकर मेरी ओर दौड़े, मेरे शरीर के टुकड़े - टुकड़े कर दिए किंतु मैं फिर जुड़ गया, अब मेरे ऊपर साँप, बिच्छु डंक मार रहे हैं, मुझे तरह-तरह की यातनाएँ दी जा रही हैं, भूख व प्यास बुझाने के कोई साधन नहीं हैं ---- आदि।"

अकबर ने पूछा - बीरबल ! अब तुम्ही बताओ भला इससे भी भयानक कुछ हो सकता है ?

बीरबल बोले - जहाँपनाह ! इससे भी भयंकर संभव है। अकबर ने कहा - वह कैसे ?

बीरबल ने जवाब दिया - "महाराज ! यदि हम हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ जैसे अनैतिक कार्यों में हीं लगे रहे तो स्वप्न में देखा सब सच भी हो सकता है।"

वैदेही संदीप जैन, दिल्ली

रंग का त्यौहार होगी : लाभ या हानि

गंभीरता से विचार करें

रंग के प्रयोग से यह मिलेगा -

1. पाप का बंध
2. कपड़ों की बरबादी
3. दीवारों, सड़कों पर गंदगी
4. बच्चा पर दुष्प्रभाव
5. बहुमूल्य समय की हानि
6. दुर्घटनायें और झगड़े
7. पानी की व्यर्थ बरबादी
8. गों में करोड़ों रुपये का नाश
9. शराब सेवन और जुआ आदि व्यसनों में वृद्धि
10. व्यापार बंद होने से आर्थिक हानि
11. पुलिस की अतिरिक्त व्यवस्था में समय व धन नाश

होली का त्यौहार वास्तव में हिन्दुओं का त्यौहार है। जैन धर्म में इसका कहीं उल्लेख नहीं है। अतः आप जैन होकर जैनत्व का पालन करें और होली पर्व पर अपने घर में बैठकर या किसी तीर्थ स्थान पर जाकर धार्मिक गतिविधियों के माध्यम से अपना समय व्यतीत करें।

बच्चों से विशेष निवेदन - बच्चो ! आप रंग से बिल्कुल दूर रहें। ऐसे दोस्तों से दूर रहें जो आपसे होली खेलना चाहते हैं और अपने विचार लिखकर भेजें उसे चहकती चेतना में प्रकाशित किया जायेगा।

निवेदक - चहकती चेतना धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका

प्रकाशक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

(बाल काव्य नाटिका)

सन्मति वन

लेखिका – श्रीमती रुचि 'अनेकांत' नई दिल्ली

(पात्र – शेर, शिकारी हिरनी, खरगोश, बंदर, कोयल, लोमड़ी, कुत्ता (दो सिपाही कुत्ते)

(दृश्य)

(खुले मंच पर उछलते हुये खरगोश का प्रवेश)

खरगोश – मैं खरगोश हूँ बड़ा निराला, लगता सबको प्यारा प्यारा
घास निकालकर खाऊँ सारी, प्यारे ! मैं हूँ शाकाहारी –2

हिरनी – (उछलते हुये प्रवेश) मैं हिरनी जंगल की रानी देखो मेरी चाल
मनमानी पकड़ न पाये कोई मुझको, लोग कहें मुझको मस्तानी,
लोग कहें .....

खरगोश – क्यों हिरनी दीदी आज बहुत मटक रही हो ? लाटरी खुली है ? जो
इतनी नाच रही हो ?

हिरनी – ऐ ! खरगोश की दुम, जब देखो तब टोकता रहता है, जानता नहीं
आज मेरा जन्मदिन है।

खरगोश – (चिढ़ाते हुये) जन्मदिन ! ही ही ..... अरे दीदी अभी पिछले महीने
ही तो तुमने जन्मदिन मनाया था।

हिरनी (घबराते हुये) वो --- वो तो मैं झूठ कह रही थी। वैसे आज मेरा सचमुच
का जन्मदिन है।

खरगोश – सचमुच का जन्मदिन ! वाह वाह तब तो दीदी बहुत मजा आयेगा।

हिरनी – खरगोश भइया ! आज मैं बहुत खुश हूँ। आहा ! चलो खरगोश प्यारे
भाई, सुबह सुहानी मन को भायी हम दोनों कोयल के पास चलें
सन्मति वन का प्यारा प्यारा गीत सुनें।

(अचानक बंदर का प्रवेश पेड़ के पीछे से)

बंदर – चीं ची करता मैं हूँ बंदर, सामान सभी छुपा लो अंदर, छीन झपट
कर सब खा जाऊँगा, हाथ नहीं फिर मैं आऊँगा।

हिरनी – अरे नटखट बंदर ! तुम्हें कैसे पता चला कि मेरा आज जन्मदिन है।

बंदर – मैं सब बातें पेड़ के पीछे से सुन रहा था। चलो ! मैं भी सन्मति वन
का गीत सुनूँगा।

खरगोश – अरे ! दीदी , दीदी देखो ! कोयल तो यहीं पर आ गयी।

कोयल – (नाचती है) जन्मदिन की बधाई .... बधाई ... 2

हिरनी – अरी ! कोयल तूने कैसे जाना कि मेरा जन्मदिन है ?

कोयल – पिछले साल गीत मैंने ही तो गाया था फिर कैसे न समझती ?

सभी – (कोयल को घेर लेते हैं और बोलते हैं) अब कोयल प्यारी लय में गीत सुनायेंगी, मीठा मधुर गीत सुन हमारे मन को भायेगी।

कोयल – मगर शर्त मेरी भी तुम्हें माननी होगी, गीत की लाइनें मेरे संग में दुहरानी होगी। बोलो मंजूर है .....

(सभी एक स्वर में) मंजूर है, मंजूर है .....

कोयल – यह प्यारा प्यारा वन है हमारा,इसे कहते हम सन्मति वन।
पेड़ फूल हैं हरी पत्तियाँ, यह है हम सबका उपवन ॥–2
सभी जीव रहते हैं यहां पर मानो आँगन में गुलशन।
हिंसा कहीं नहीं है यहां पर, यहां अहिंसा का सावन ॥–2
शेर गाय हिरन खरगोश हैं,एक संग ही रहा करते।
कभी झगड़ा–दुश्मनी नहीं, कोई आपस में करते ॥–2
यह प्यारा–प्यारा वन .....

(तभी अचानक शेर का प्रवेश) (दहाड़ की ध्वनि) (मंच पर प्रकाश का चकाचौंध)

शेर – भागो – भागो जल्दी भागो, मुँह ना देखो, दौड़कर भागो
जल्दी भागो वो आ रहा है, लिए तुम्हारे मौत का पैगाम आ रहा है।

खरगोश (घबड़ाते हुये) अरे --- रे मगर कौन आ रहा है ?

शेर – म–म–म मनुष्य हिंसामयी मनुष्य। शिकारी आ रहा है।
तुम सभी यहां से चले जाओ,दौड़कर कहीं पर छिप जाओ,
वरना वह आ जायेगा,तुम सभी को खा जायेगा।

हिरनी – किंतु महाराज आप ?

शेर – अरे चिंता ना करो तुम मेरी, आज बज जाने दो रण भेरी,
मेरे रहते नहीं पहुँच सकता है कष्ट तुम्हें, इसके
लिए चाहे जान देनी पड़ जाये हमें।

क्रमशः शेष अगले अंक में

हमारे तीर्थक्षेत्र –

सिद्धक्षेत्र गजपंथा

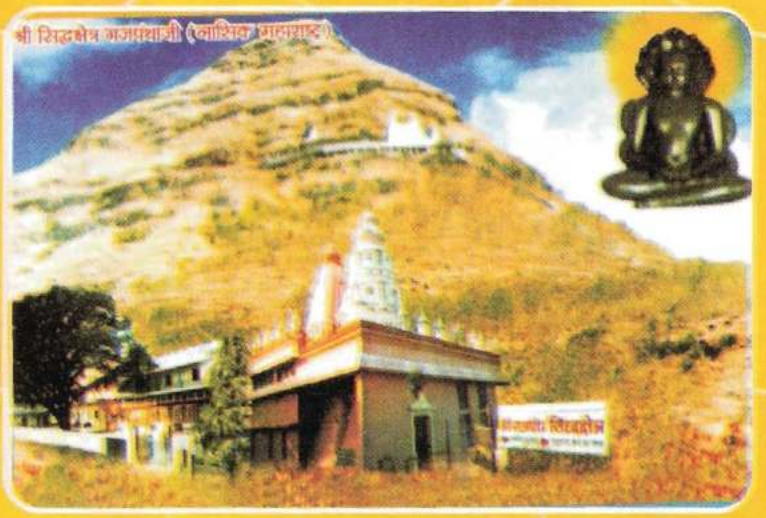

सिद्ध क्षेत्र गजपंथा महाराष्ट्र के नासिक जिले के ग्राम म्हसरुल में स्थित है। यह स्थान नासिक बस स्टेंड से 5 किमी की दूरी पर है। इस क्षेत्र से 7 बलभद्र और 8 करोड़ मुनि मोक्ष गये है। नीचे तलहटी में अति सुंदर जिनमंदिर है जिनमें प्राचीन प्रतिमायें स्थित है। साथ ही ठहरने के लिये सर्व सुविधा युक्त धर्मशाला भी है। 400 फुट की ऊँचाई के पर्वत पर 3 जिनमंदिर हैं और 2 नव निर्मित जिनालय है। यहां गुफाओं को लेणी कहा जाता है। क्षेत्र का नाम चामर लेणे के नाम से जाना जाता है।

सिद्धक्षेत्र गजपंथा से मांगीतुंगी 128 कि.मी, कचनेर से 216 कि. मी., पैठण 235 कि.मी., कुंथलगिरि 300 कि.मी., देवलाली मात्र 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

START
CHETAN
Start Again
Start Again
Wait till 2 turns
Start Again
Wait till you get 5
Wait till 2 turns
Start Again
Start Again
Wait till 2 turns
Wait till you get 5
Start Again

कोल्ड ड्रिंक्स खतरनाक हैं

बच्चो ! अब गर्मी का मौसम आ रहा है और आप सबको पेप्सी, कोकाकोला आदि कोल्ड ड्रिंक्स बहुत पसंद है। जानिये इनके बारे में –

सभी कोल्ड ड्रिंक में इथीलीन ग्लाइकोल नामक जहर होता है जो कोल्ड ड्रिंक्स को शून्य तापमान पर भी जमने नहीं देता है। यदि कोई व्यक्ति एक घंटे में 4 लीटर कोल्ड्र ड्रिंक पी ले तो मृत्यु निश्चित है।

किसी व्यक्ति की मृत्यु पश्चात अग्निदाह संस्कार में देशी घी डाला जाता है जिससे पूरा शरीर जल जाता है व हड्डियाँ भी काफी हद तक जल जाती हैं परन्तु दांत बिल्कुल नहीं जलते हैं इसी तरह यदि दांत को मिट्टी में गाड़ दे व 20 साल के बाद निकालें तो भी दांत बिल्कुल नहीं गलता है। जिस दांत को घी की 1300° डिग्री आग नहीं जला सकती, मिट्टी नहीं गला सकती, उसे किसी भी कोल्ड ड्रिंक में डालने पर ज्यादा से ज्यादा एक महीने में पूरा घुल जाता है तथा छानने पर भी दिखाई नहीं देता।

इसका कारण सभी कोल्ड ड्रिंक्स में फास्फोरस एसिड नामक तेजाब होता है जो मनुष्य के शरीर के सबसे कठोर अंग यानि दांत को ही नहीं बल्कि दुनिया की अधिकतर वस्तुओं, यहां तक कि लोहे को भी पूरी तरह से खा जाता है। इसे पीने से अमाशय व आंतड़ियों में घाव, हड्डियों को गलाना, दांत गिराना व हृदय रोग होते हैं।

घर में संडास साफ करने में इस्तेमाल होने वाले हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड व कोल्डड्रिंक दोनो का पी.एच. 2.4 है। ऐसे कोल्डड्रिंक को पीना चाहिये या..... ..??जरा सोचिये !!!

सभी कोल्डड्रिंक में कार्बन डाई आक्साईड नामक जहरीली गैस डाली जाती है जिससे लम्बे समय तक खराब न हो। कोल्डड्रिंक पीने पर शरीर इसे नाक व मुंह के माध्यम से वापिस बाहर निकाल देता है यदि कभी गलती से कार्बनडाई आक्साईड बाहर न निकल पाये तो व्यक्ति मर जायेगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्लू. एच. ओ. ने कोल्डड्रिंक को धीमा जहर घोषित किया है।

कोल्ड ड्रिंक में अत्याधिक चीनी मिलाई जाती है जिससे मोटापा व कब्ज बढता है। मोटापे की शिकायत के बाद इन कम्पनियों ने डाईट कोक व डाईट पेप्सी नामक नये कोल्डड्रिंक बनाये है इसमें चीनी की जगह एस्परटेम डाला जाता है जो चीनी से लगभग 1000 गुना अधिक मीठा होता है परन्तु कैलोरी कम देता है। जानने योग्य है कि एस्परटेम से बच्चों में ब्रेनहेमरेज (मस्तिष्क का घात) होकर मृत्यु भी हो सकती है। इसलिये बोतल/केन पर चेतावनी लिखी जाती है कि बच्चे इस्तेमाल न करें।

सेंटर फॉर सांइस एंड एन्वायरमेंट (सीएसई) ने दावा किया है कि देश के 12 राज्यों से जुटाए कोल्डड्रिंक के 11 ब्रांडों के 57 नमूनों में कीटनाशक और प्रतिबंधित रसायन मिले हैं। 2003 में भी इन ब्रांडों में कीटनाशक की मात्रा निर्धारित मानकों से अधिक पाए जाने पर संसद में मामले की जांच की थी। सीएसई के अध्ययन में भी यह खुलासा किया गया था। अब सॉफ्ट ड्रिंक्स हाईटुथ 2 नाम के अध्ययन में दावा किया है कि 2003 की तुलना में पेप्सी में औसतन 30 फीसदी और कोकाकोला में 27 फीसदी कीटनाशक ज्यादा मिला है। ये नमूने 25 निर्माण इकाइयों से जुटाए गए हैं। सीएसई निदेशक सुनीता नारायण ने बताया कि कोलकाता से ली गई कोलाकोला की एक बोतल में निर्धारित मानक से 140 गुना ज्यादा लिंडेन कीटनाशक और ठाणे से ली गई कोका-कोला की बोतल में न्यूरोटॉक्सिन क्लोरोपायरिफॉस 200 गुना ज्यादा पाया गया। नारायण ने कहा कि ये विषैले पदार्थ लंबी अवधि में शरीर पर असर डालते हैं और सबसे बड़ी बात ये कोल्ड ड्रिंक्स अनछने पानी के ही तो हैं। तो बच्चो ! क्या आप अब भी कोल्ड ड्रिंक्स पियेंगे ? आप जूस पीजिये और स्वस्थ रहिये।

चहकती चेतना मांगकर मत पढिये,
सदस्य बनिये और गौरव से स्वयं पढ़िये
और परिवार को पढ़ाईये।

अच्छे बच्चे

पापा मम्मी कहें वो बच्चे सबसे अच्छे होते हैं
सुबह को जल्दी उठते हैं, रोज मंदिर जाते हैं ।
रात्रि भोज न करते हैं, पानी छान के पीते हैं ।
पाठशाला जो जाते हैं, सबको अच्छे लगते हैं ।
पापा मम्मी कहें वो बच्चे सबसे अच्छे होते हैं ॥ 1 ॥
बड़ों का आदर करते हैं, हिल मिल कर जो रहते हैं ।
झूठ से हरदम डरते हैं, सच्ची बाते करते हैं ।
पापा मम्मी कहें वो बच्चे सबसे अच्छे होते हैं ॥2 ॥

श्रद्धा का हम रंग बनायें,
ज्ञान मात्र की पिचकारी ।
निज परिणति को लक्ष्य बनायें,
सार्थक हो होली न्यारी ।

जैनधर्म की ए, बी, सी

मुझे सांसारिक सुखों की कोई कामना नहीं है
ना ही अपने नाम और शरीर की चाहत है
नमिनाथ भगवान पर मेरी श्रद्धा कभी कम न हो
उनका नाम मेरे होठों पर, मेरी अंतिम सांस तक रहे

I don't prey for worldly wealth
Not is full with sorrow pain
NAMINATH never lose faith
Name on lips till final breath

आप मेरे हृदय कमल में विराजमान रहें
वह मेरे लिये सबसे खास है
मुझे नेमिनाथ भगवान का चेहरा अच्छा लगता है
आप मुझे सदविचारों का आशीष दीजिये।

In my heart you own a palace
That is like a special case
I like NEMINATH face.
Blass me god with Supreme grace.

कमठ ने आप पर बहुत उपसर्ग किये
फिर भी आपने उसे क्षमा कर दिया
ओ पार्श्वनाथ भगवान ! ऐसी सहनशीलता मुझमें भी आये
जिससे मैं भी अपने पथ से विचलित ना हो सकूँ।

Kamatha harmed you not the less
Blessed you him give forgiveness
*Oh **PARSHAWANATH** give me patience*
Can not move me disturbance

भगवान आपके पास राज्य वैभव, हीरे मोती सब थे,
फिर भी आपका उनसे कोई लगाव नहीं था,
आपने सब कुछ छोड़ा, ओ महावीर आप महान थे,
जो भी आपके पास है उसमें से थोड़ा सा ज्ञान मुझे भी दीजिये।

Kingdom palace ornament
You had but not attachment
*Left you **MAHAVEER** brave*
Give me little what you have.

ज्ञान पहेली

दिमाग लगाओ - पुरस्कार पाओ

नीचे दी गई पहेलियों का उत्तर लिखकर भेजिये । सही पांच विजेताओं को पुरस्कार दिये जायेंगे । पांच से अधिक सही उत्तर प्राप्त होने पर पांच विजेताओं का चयन ड्रा द्वारा किया जायेगा । इन पहेलियों के उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है ।

तीन लोक में अनुपम है, वो तीन लोक में सार ।
उसकी महिमा बढ जाती है, जो करता उससे प्यार ॥

पाँचों अलग–अलग हैं, परंतु मार्ग सभी का एक ।
जो उनके मार्ग को अपनाता, जागा उनका परम विवेक ॥

नहीं कहती नहीं बुलाती, फिर भी लोग कहें वह कहती ।
हाथ पैर नहीं उसके पर वह सबकी हितकर है ।

न जन्म दिया न दूध पिलाया ।
फिर लोग कहते रहते माँ ।

चौथे काल में होते दो दर्जन ।
एक के बाद एक होते है कर्मों के नाशक ॥

पुरस्कार प्रायोजक

अनेकांत फार्मेसी

डॉ. योगेश चंद जैन

अलीगंज, जिला– एटा (उ.प्र.)

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न 1 – अभव्य में भी आत्मा है और सभी आत्मायें एक बराबर है तो उसे मुक्ति क्यों नही मिल सकती?

– बालचंद जैन, सागर

उत्तर – आचार्य कुन्दकुन्द देव ने लिखा है कि सव्वे सिद्धसहावा सुद्धणया ससिदी जीवा। शुध्द निश्चय नय से सभी संसारी जीव सिध्द स्वभावी हैं। अतः सबमें अभव्य भी आ गये। परंतु समान होने पर भी अभव्य कभी आत्मा की पहचान नहीं कर पायेंगे और मुक्ति प्राप्त करने की योग्यता न होने से कभी भी पर्याय में सिद्ध नहीं बन पायेंगे।

प्रश्न 2 – क्या एकल विहारी साधु को आचार्य पद दिया जा सकता है?

– संतोष जैन, धार म.प्र.,

उत्तर – आचार्य ही किसी को योग्य पात्र जानकर आचार्य पद देते हैं और वे आचार्य ही योग्य समझकर एकाकी विहार की आज्ञा देते हैं।

प्रश्न 3 – जब मनुष्य सब कुछ जानता है कि सब कुछ छोड़कर जाना पड़ेगा, तब भी मनुष्य पाप क्यों करता है?

– अमित जैन, पिपरिया (उ.प्र.)

उत्तर – उसे पाप का फल नरक आदि मिलेगा, इसका ज्ञान न होने पर वह पाप करता है।

प्रश्न 4 – समवशरण की रचना कौन करता है?

– नितिन जैन, भटनागर

उत्तर – समवशरण सुंदर और व्यस्थित होता है। इसकी रचना सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर करता है।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

आपके ब्रश से

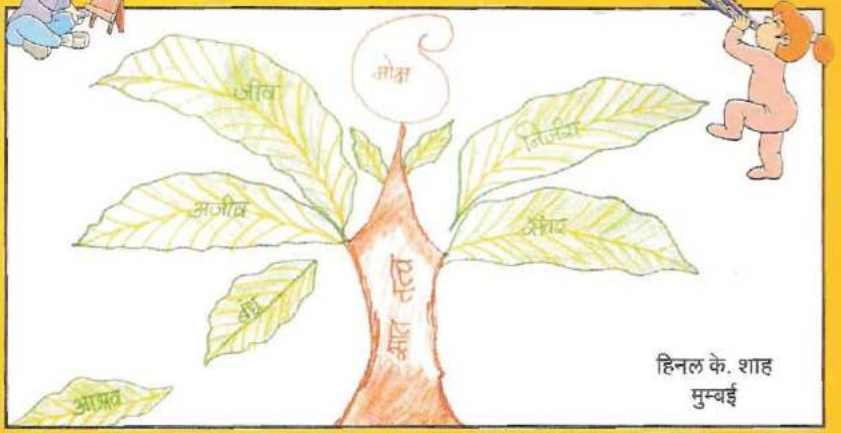

हिनल के. शाह
मुम्बई

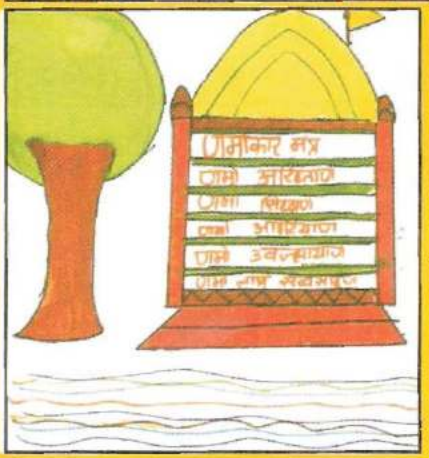

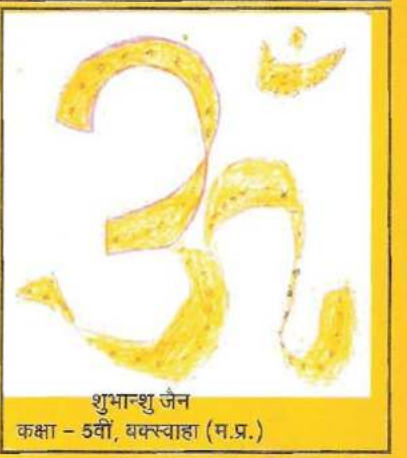

शुभान्शु जैन
कक्षा – 5वीं, बक्स्वाहा (म.प्र.)

नियति गांधी
मलाड, मुम्बई

मान का जहर

सार – इसके पहले आपने पढ़ा कि सनत कुमार के रुप की की चर्चा स्वर्ग में होती थी। उनके रुप को देवो ने अखाड़े में देखा अपने रुप को अधिक सुंदर करने के लिये वे आभूषण पहनकर राज सभा में आये इसके आगे

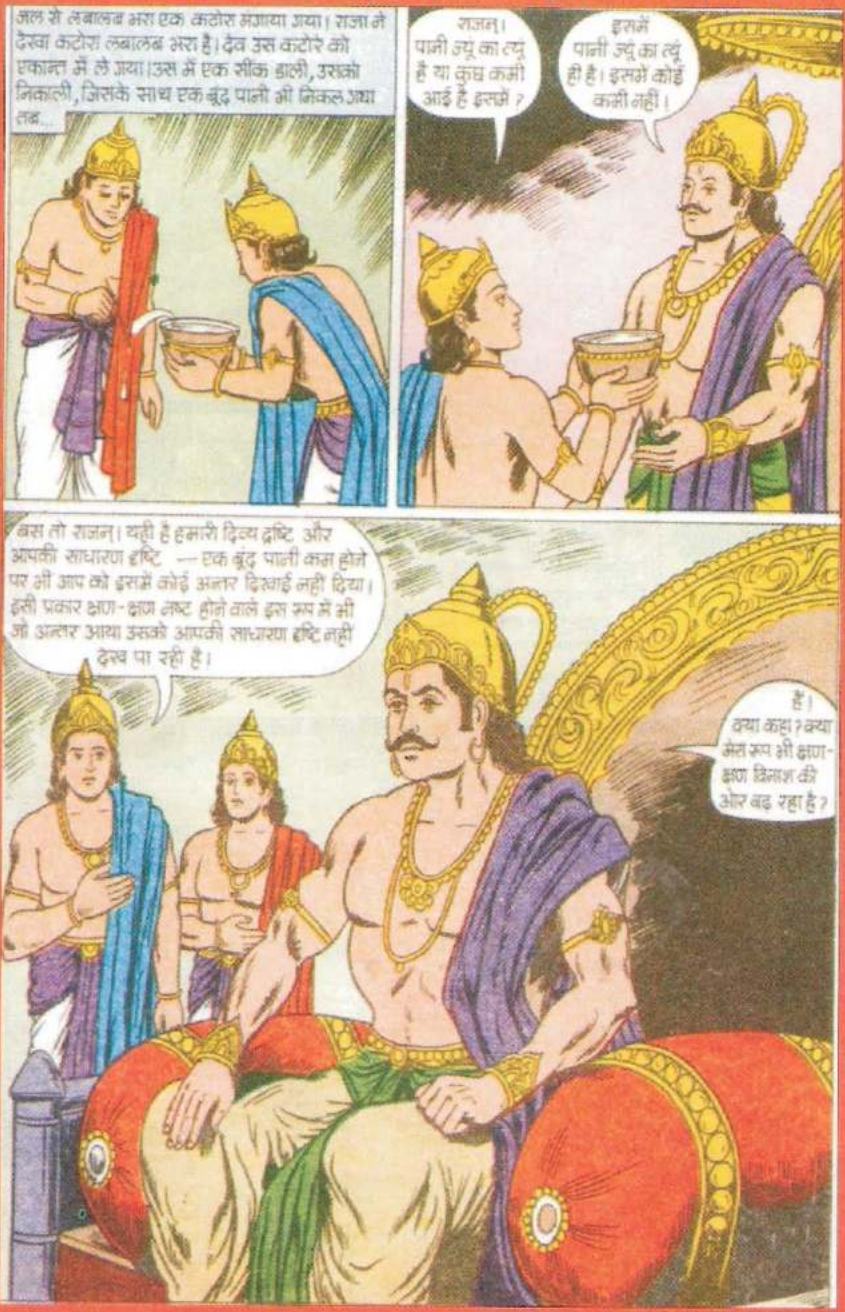

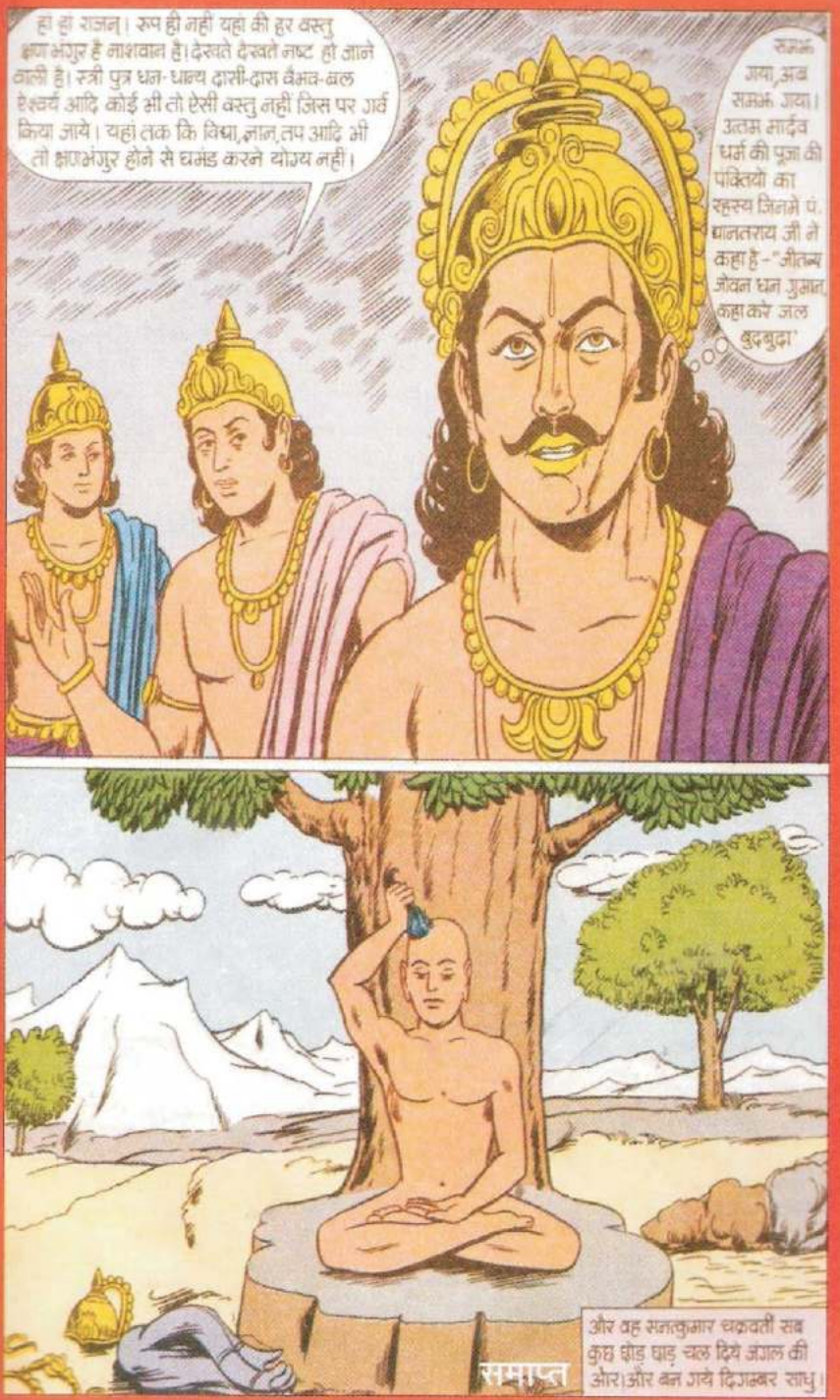

हां हां राजन्। रूप ही नहीं यहां की हर वस्तु क्षण भंगुर है नाशवान है। देखते देखते नष्ट हो जाने वाली है। स्त्री पुत्र धन-धान्य दासी-दास वैभव-बल ऐश्वर्य आदि कोई भी तो ऐसी वस्तु नहीं जिस पर गर्व किया जाये। यहां तक कि विद्या, ज्ञान, तप आदि भी तो क्षणभंगुर होने से घमंड करने योग्य नहीं।
समझ गया, अब समझ गया। उत्तम मार्दव धर्म की पूजा की पंक्तियों का रहस्य जिनमे पं. द्यानतराय जी ने कहा है-"जीतव्य जीवन धन गुमान, कहा करे जल बुदबुदा"
और वह सनतकुमार चक्रवती सब कुछ छोड़ छाड़ चल दिये जंगल की ओर। और बन गये दिगम्बर साधु।
समाप्त